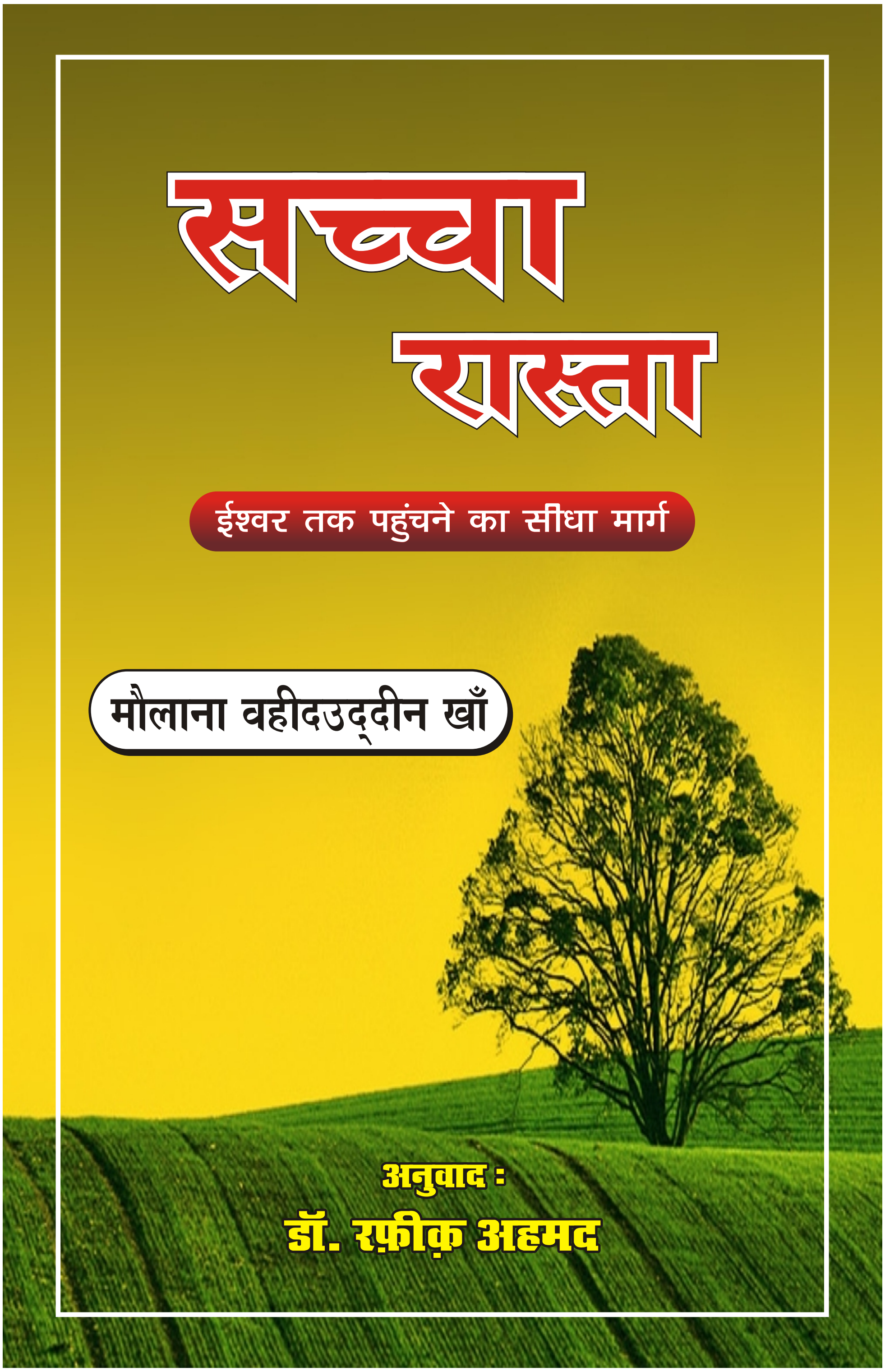
सच्चा रास्ता
ईश्वर तक पहुंचने का सीधा मार्ग
मौलाना वहीदउद्दीन ख़ाँ
अनुवाद :
डॉ. रफ़ीक़ अहमद

नाम किताब	:	सच्चा रास्ता
हिन्दी अनुवाद	:	डा० रफ़ीक़ अहमद (पी–एच०डी०) प्रवक्ता मुस्लिम इण्टर कालेज फ़तेहपुर, मो० 09451767474
हिन्दी एडीशन	:	2010
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	20
कम्पोज़िंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर
क़ीमत	:	दुआये ख़ैर

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों को मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

ज़ेरे निगरानी : जमाअते इस्लामी हिन्द,फ़तेहपुर

मानव की खोज

मानव एक पूर्ण संसार चाहता है, परन्तु वह अपूर्ण संसार में रहने के लिए विवश है। हमारी प्रसन्नतायें अस्थायी हैं। हमारी प्रत्येक सफलता अपने साथ असफलता का परिणाम लिये हुए है। हम अपनी आशाओं की प्रातः बेला को पूरी तरह से देख भी नहीं पाते कि संध्या उसको घेर लेती है। हमारे जीवन रूपी वृक्ष की हरियाली और बसन्त के कुछ वर्ष भी नहीं व्यतीत होने पाते कि दुर्घटना, विपत्तियां, वृद्धावस्था तथा मृत्यु उसे इस प्रकार समाप्त कर देती हैं, जैसे कि उसका कोई अस्तित्व ही न था।

पुष्प कितने सुन्दर होते हैं, परन्तु पुष्प मात्र इसलिये खिलते हैं कि वह मुरझा जायें। सूर्य की किरणें कितनी आनन्द दायक हैं, परन्तु सूर्य के प्रकाश के लिये यह बाध्यता है कि वह कुछ देर के लिये चमके और इसके बाद रात्रि की कालिमा इसे ढक ले। एक जीवित व्यक्ति का अस्तित्व कितना चमत्कारी है, किन्तु कोई भी व्यक्ति अपने आप को मृत्यु एवं दुर्घटना से नहीं बचा सकता। वर्तमान संसार के प्रत्येक वस्तु की यही स्थिति है। यह संसार कल्पना की परिधि तक मोहक एवं अर्थपूर्ण है, परन्तु यहाँ की प्रत्येक विशेषता नश्वर है। यहाँ कुछ भी दोषरहित नहीं है, जो किसी प्रकार उससे अलग नहीं होता। जो ईश्वर स्वयं पूर्ण हो, वह एक ऐसी सृष्टि से सन्तुष्ट नही हो सकता, जो अपूर्ण हो। पूर्ण का अपूर्ण पर सन्तुष्ट हो

जाना सम्भव नहीं है। यही इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान संसार ही अन्तिम नहीं है। यह ज़रूरी है कि इसके बाद एक और संसार हो जहाँ वर्तमान संसार की कमियों की पूर्ति हो।

वर्तमान संसार के सम्बंध से यह मालूम हो चुका है कि वह नश्वर है। वह लगभग 20 हजार मिलियन वर्ष पूर्व एक विशेष समय उत्पन्न हुई। इससे सिद्ध होता है कि इस सृष्टि का सृजनहार अनादि एवं अनन्त है। एक अनादि सृष्टा ही एक आदि सृष्टि को जन्म दे सकता है, यदि ईश्वर सार्वकालिक न हो तो वह सृष्टि कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सकती, जो सार्वकालिक नहीं है। वास्तविकता यह है कि नश्वर सृष्टि को स्वीकार करने के लिये यह आवश्यक है कि हम एक अविनाशी सृष्टा को स्वीकार करें। नश्वर सृष्टि का अस्तित्व यह प्रमाणित करता है कि यहाँ एक अनश्वर सृष्टा मौजूद है, यदि सृष्टा अनादि न होता तो वह सिरे से मौजूद ही न होता और जब सृष्टा का अस्तित्व न होता तो सृष्टि का अस्तित्व सम्भव ही न होता।

जब हम कल्पना करते हैं कि संसार 25 नवम्बर को अस्तित्व में आया, तो उसका अर्थ यह है कि 25 नवम्बर से पूर्व भी कोई अस्तित्व था जिसने उसे जन्म दिया। यदि यह कहा जाये कि जन्मदाता भी किसी पिछले 25 नवम्बर को पैदा हुआ था तो यह बात निरर्थक होगी। जन्मदाता यदि किसी पिछले 25 नवम्बर को पैदा

होने वाला हो तो वह कभी पैदा ही नहीं हो सकता। वास्तविकता यह है कि सृष्टा सार्वकालिक सदैव से था। इसलिये उसने अल्पकालिक को जन्म दिया, यदि वह सार्वकालिक न होता तो वह सिरे से मौजूद ही न होता तो फिर अल्पकालिक का अस्तित्व कहाॅं से अता। ईश्वर अविनाशी है, अतः वह एक पूर्ण अस्तित्व है क्योंकि अविनाशी होना पूर्णताः का सर्वोच्च्य गुण है। जो अविनाशी होगा वह पूर्ण भी होगा। अविनाशिता एवं पूर्णता अभिन्न हैं जो दूसरे से अलग नहीं हो सकते। वर्तमान संसार ईश्वरीय गुणों का विश्वरूप है परन्तु वर्तमान संसार की अपूर्णता एवं सीमितता यह बताती है कि यह संसार ईश्वर के गुणों का सम्पूर्ण प्रदर्शन नहीं है। पूर्ण एवं अनन्त ईश्वर के गुणों का प्रदर्शन वही है जो स्वयं भी पूर्ण एवं अनन्त हो। वास्तविकता यह है कि हमारी दुनिया को अभी एक और दुनिया की प्रतीक्षा है। ईश्वर के गुणों का विश्वरूप अपनी पूर्णता प्रकट करने के लिये अभी एक और प्रदर्शन की मांग करता है।

स्वर्ग– ईश्वर का वह संसार है, जहां उसके गुणों का प्रदर्शन अपनी चरम सीमा पर होगा । स्वर्ग उन सभी दोषों से मुक्त होगा, जिनकी हम वर्तमान संसार में अनुभूति करते हैं। स्वर्ग ईश्वर की उस पूर्ण सामर्थ्य की प्रस्तुति है, जो सौन्दर्य में स्थायित्व की विशेषता पैदा कर सकता है। वह आनन्द को असीमित बनाने का अधिकार रखता है। वह ऐसे संसार को जन्म दे सकता है, जहाँ अपारशान्ति हो तथा

जिसका सुख स्थायी हो ।

प्रत्येक व्यक्ति एक अदृश्य शान्ति की खोज में है। वह एक ऐसे पूर्ण संसार का इच्छुक है। जिसको वह अभी तक नहीं प्राप्त कर सका। यह इच्छा वर्तमान संसार में अपरिचित नहीं हैं। जो सृष्टि एक अनादि ईश्वर की साक्षी हो वहाँ अनन्त गुणों से युक्त संसार का प्रदर्शन उतना ही सम्भव है, जितना स्वयं इस वर्तमान अस्थायी एवं अल्पकालिक संसार का प्रदर्शन । क्योंकि जिस सृष्टि का सृष्टा स्वयं अनादि एवं सार्वकालिक हो, वह अपने गुणों के अस्थायी तथा अल्पकालिक प्रदर्शन पर सन्तुष्ट नहीं हो सकता । जिस ईश्वर ने नास्ति को अस्ति में परिवर्तित किया, वह वास्तव में उस अस्तित्व में स्थायित्व की विशेषता उत्पन्न कर सकता है, और निश्च ही दूसरा कार्य पहले कार्य की अपेक्षा कुछ कठिन नहीं है।

शाश्वतता एक मुख्य ईश्वरीय गुण है फिर इस गुण में उसका कोई भागीदार नही है। यह एक उत्कृष्ट गुण है, जो मात्र एक ईश्वर के लिये ही सम्भव है। वह स्वर्ग जो ईश्वर की शाश्वत गुण का प्रदर्शन हो, ऐसा आश्चर्य युक्त होगा, जिसकी कोई भी व्यक्ति कल्पना नही कर सकता। वह सौन्दर्य जिसके लिये कभी मुरझाना न हो । वह आनन्द जो कभी समाप्त होने वाला न हो। वह सुख जिसका सिलसिला अनन्त हो। आशाओं एवं इच्छाओं का वह संसार, जिसकी विशेषताओं का कभी पतन न हो तो ऐसा स्वर्गीय संसार इतना

आश्चर्यपूर्ण सीमा तक आनन्दमय होगा कि व्यक्ति नींद में भी उससे अलग नहीं होना चाहेगा, चाहे उस पर हज़ारों वर्ष क्यों न व्यतीत हो जायें ।

मानव सदैव एक ऐसे जीवन की खोज में रहता है। जिसमें उसको स्थायी तथा असीम आनन्द प्राप्त हो और यह खोज उचित भी है और मानवीय प्रवृत्ति के अनुसार भी, परन्तु हमारे स्वप्नों का यह जीवन वर्तमान संसार में स्थाई आनन्द की व्यवस्था असम्भव है। यहाँ वे साधन उपलब्ध ही नही हैं, जो स्थायी आनन्द तथा सुखमय संसार को प्रकट करने के लिये आवश्यक हैं।

पैगम्बर ने बताया कि वर्तमान संसार को ईश्वर ने परीक्षा स्थल बनाया है, न कि पुरस्कार प्राप्ति का स्थान । यहां मात्र वे साधन एकत्र किये गये हैं, जो व्यक्ति की परीक्षा के लिये आवश्यक हैं। सुखपूर्ण तथा आनन्दमय स्थायी जीवन प्राप्त करने के लिये जिन साधनों की आवश्यकता है, वे पारलौकिक जीवन में उपलब्ध होंगे । जो इस संसार के पश्चात हमारे समक्ष उपस्थित होने वाला है। और हमारे और उस अगामी संसार के मध्य मृत्यु का फ़ासला है। मृत्यु व्यक्ति की परीक्षा की समाप्ति का समय है और उसी के साथ स्थायी संसार में प्रवेश का द्वार भी ।

जो व्यक्ति यह इच्छा रखता हो कि उसको अपने स्वप्नों का जीवन प्राप्त हो, उसको वर्तमान संसार में अपना स्वर्ग बनाने के व्यर्थ

प्रयासों में अपना बहुमूल्य समय नष्ट नहीं करना चाहिए । इसके स्थान पर उसे यह प्रयत्न करना चाहिये कि वह वर्तमान संसार में होने वाली परीक्षा में सफलता प्राप्त करे । वह ईशदूत के आदर्शों का अनुपालन करे तथा अपना स्वेच्छाचारी जीवन ईश्वरीय आदेशों के समक्ष समर्पित कर दे।

जो लोग वर्तमान परीक्षा में सफल होंगे वे अगले जीवन में अपने स्वप्नों का संसार प्राप्त करेंगे और जो इस परीक्षा में असफल रहेंगे वे जीवन के अगले क्षणों में इस स्थिति में पहुँचेंगे कि अनन्त विनाशिता के सिवाये और कोई वस्तु न होगी जो वहा उनका स्वागत करे ।

★

सत्य क्या है

एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक सीधी रेखा मात्र एक ही होती है इसी प्रकार व्यक्ति को ईश्वर तक पहुँचाने वाला सीधा मार्ग भी कोई एक ही हो सकता है। इसी मार्ग का नाम सच्चाई है। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि सत्य क्या है तथा उस सत्य की खोज किस प्रकार की जाये।

हमारा सौभाग्य है कि सत्य जिस प्रकार एक है उसी प्रकार वह मैदान भी मात्र एक है। यहाँ कई वस्तुयें नहीं हैं, जिनके मध्य चुनाव का प्रश्न उत्पन्न हो, यहाँ तो मात्र एक ही वस्तु है, जिसको स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। यह सत्य मुहम्मद सल्ल० की शिक्षायें हैं यदि कोई व्यक्ति सत्य की खोज में एकाग्रचित हो तो वह पायेगा कि ईश्वर ने उसको चुनाव की दुविधा में नहीं डाला है, बल्कि ईश्वर ने हमको एक ऐसे संसार में रखा है जहां चुनाव सत्य और असत्य के मध्य है न कि सत्य और सत्य के मध्य। (सूरह यूनुस-32)

दर्शनशास्त्र सत्य की खोज में कम से कम पांच हज़ार वर्षों से प्रयत्नशील है परन्तु उसकी लम्बी खोज ने उसको मात्र इस स्थान तक पहुॅचाया है, कि वह स्वयं स्वीकार कर रहा है, कि वह अन्तिम सत्य तक पहुॅचने में अयोग्य तथा अक्षम सिद्ध हुआ है और न ही कभी पहुँच सकता है। दर्शन शास्त्र की विधि यह है, कि वह बुद्धि एवं

विवेक के माध्यम से सत्य तक पहुँचने का प्रयत्न करता है परन्तु विवेक अपने ज्ञान की सीमा तक चिन्तन करता है और सत्य का मामला एक ऐसा मामला है जिसके विषय में कोई वास्तविक विचार प्रस्तुत करने के लिये पूरी सृष्टि का ज्ञान आवश्यक है। किसी भी दार्शनिक को आज तक सृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ इसीलिये वह सत्य के सम्बंध में कोई अन्तिम विचार प्रस्तुत नहीं कर सकता।

विज्ञान ने इस सम्बंध में अपने को इस क्षेत्र से अलग कर रखा है। विज्ञान की खोज उन विषयों तक सीमित है जहाँ पुनरावृत्ति के अनुभव के द्वारा निष्कर्ष तक पहुँचाना सम्भव हो। विज्ञान पुष्प के रासायनिक तत्व को चिन्तन का विषय बनाता है। परन्तु वह पुष्प की सुगन्ध को अपनी बहस से निष्कासित कर देता है, क्योंकि पुष्प के रासायनिक तत्व तौले और नापे जा सकते हैं, परन्तु पुष्प की सुगन्ध को तौलने और नापने का कोई मापक यन्त्र विज्ञान के पास उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार विज्ञान ने अपने चिन्तन परिधि को स्वयं ही सीमित कर लिया है। अतः विज्ञान ने पहले से ही स्वीकार कर लिया है कि वह सांसारिक तत्थ के मात्र आंशिक पहलू से ही बहस करता है। वह पूर्ण एवं अन्तिम सत्य के सम्बंध में कोई अकाट्य विचार प्रस्तुत करने की स्थिति में नहीं है।

अध्यात्मिक व्यक्तियों का यह दावा है या उनके अनुयायी

यह विश्वास रखते हैं कि वह सत्य से पूर्ण अवगत हैं और सत्य का अन्तिम ज्ञान प्रस्तुत कर सकते हैं, परन्तु इस विश्वास का कोई आधार नहीं है। अध्यात्मिक व्यक्ति अपने दावे के अनुसार जिस साधन के द्वारा सत्य से अवगत होते हैं, वह अध्यात्मिक अभ्यास है परन्तु नाम मात्र के अध्यात्मिक अभ्यास वास्तव में शारीरिक अभ्यास हैं और शारीरिक अभ्यास के द्वारा अध्यात्मिक खोज स्वयं एक निरर्थक कार्य है। दूसरा यह कि कोई भी अध्यात्मिक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में उन सीमाओं से परे नहीं है, जिन सीमाओं के शिकार उस जैसे दूसरे सभी व्यक्ति हैं। व्यक्ति अपनी जिन सीमाओं के कारण सत्य से अवगत नहीं हो सकाता, वही सीमायें स्वयं अध्यात्मिक लोगों के मार्ग में भी बाधक हैं। किसी भी प्रकार का अभ्यास व्यक्ति को उसकी प्राकृतिक सीमाओं से मुक्त नहीं कर सकता। अतः अभ्यास उसको पूर्ण तथा अन्तिम सत्य तक नहीं पहुॅंचा सकता। इसके बाद इस मैदान में मात्र ईशदूत (पैग़म्बर) शेष बचते हैं। ईशदूत वह पूर्ण व्यक्ति होता है, जो यह कहता है कि ईश्वर ने उसको चुना है, और उस पर सत्य का ज्ञान उतारा है, ताकि वह उस सत्य को समस्त मानवजाति तक पहुॅंचा दे। अपनी प्रकृति की सीमा तक मात्र यही एक दावा विश्वस्नीय है, क्योंकि सत्य का वास्तविक ज्ञान केवल ईश्वर को ही हो सकता है, जो अनादि और अनन्त है और समस्त वास्तविकताओं से पूर्ण रूपेण अवगत है।

ईश्वर का ईश्वर होना यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि वह सत्य का पूर्ण ज्ञान रखता है, इसलिये जो व्यक्ति यह कहे कि उस को प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की ओर से सत्य का ज्ञान प्राप्त हुआ है। उसका दावा वास्तव में इस योग्य है कि इस सम्बंध में उसको मान्यता दी जाये।

यहाँ एक प्रश्न और उठता है कि इस संसार में अनेक ईशदूतों का आगमन हुआ है तथा उनके धार्मिक ग्रन्थों की संख्या भी अनेक हैं। फिर किस ईशदूत को स्वीकार किया जाये। यदि व्यक्ति सत्य की खोज में गम्भीर हो जाये तो उसको इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर लेने में कोई कठिनाई नहीं होगी। निःसन्देह अतीत में अनेक ईशदूत भेजे गये परन्तु मानव के पास अतीत की किसी भी घटना को मानने के लिये ठोस मापदण्ड यह है कि उसका ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हो। इस प्रकार एक के अतिरिक्त दूसरे समस्त ईशदूत इस मानवीय मापदण्ड पर खरे नहीं उतरते । आज मात्र एक ही ऐतिहासिक ईशदूत है और दूसरे समस्त ईशदूत मात्र आस्था एवं विश्वास पर टिके हुये हैं। इस जगत में जितने भी ईशदूत आये हैं उनमें मात्र एक ही ईशदूत है जिसको पूर्ण ऐतिहासिक प्रमाणिकता की मर्यादा प्राप्त है। वह ईशदूत मुहम्मद सल्ल० हैं। आपके सम्बंध में प्रत्येक बात का पूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है। वर्तमान युग के किसी भी व्यक्ति के विषय में हम जितना जानते हैं उससे भी अधिक

हम मुहम्मद सल्ल० के विषय में जानते हैं। आपके अतिरिक्त समस्त ईशदूत परम्पराओं के अन्धकार में अदृश्य हो गये हैं। उनके बारे में पूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं और न ही उनके ग्रन्थ एवं शिक्षायें मूल रूप में सुरक्षित हैं। यह मर्यादा मात्र मुहम्मद सल्ल० को ही प्राप्त है। जिनका सम्पूर्ण जीवन परिचय इतिहास के पन्नों में अंकित है और वह पवित्र ग्रन्थ भी बिना किसी सूक्ष्म परिवर्तन के मूल रूप में मौजूद है। जिसको आपने यह कह कर लोगों के हवाले किया था, कि यह मेरे पास ईश्वर की ओर से आया है।

वास्तविकता यह है कि विशुद्ध ज्ञान एवं बौद्धिक दृष्टि से देखा जाये तो ''सत्य क्या है'' के प्रश्न का उत्तर न केवल वैचारिक स्तर से एक है बल्कि व्यवहारिक स्तर पर भी मैदान में मात्र एक ही उत्तर मौजूद है। यहाँ दूसरा कोई उत्तर वास्तविक रूप में है ही नहीं। हमें अनेक उत्तरों में से मात्र एक उत्तर का चुनाव नहीं करना है। बल्कि एक ही अन्तिम उत्तर को स्वीकार करना है।

यह सत्यता ईश्वरीय-वाणी है और ईश्वरीय-वाणी सदैव एक ही रहती है। जिस प्रकार संसार की दूसरी वस्तुओं के लिये ईश्वरीय आदेश सदैव से एक ही है, उसी प्रकार मानव जाति के लिये भी ईश्वरीय आदेश एक है और सदैव एक ही रहेगा। पृथ्वी एवं आकाश के नियम अरबों वर्ष व्यतीत होने पर तनिक भी परिवर्तित नहीं होते। वृक्ष एवं जल के सिद्धान्त जो एक भौगोलिक क्षेत्र में होते

हैं, वही दूसरे क्षेत्र में भी होते हैं। यही हाल मानव के बारे में ईश्वर के आदेश का भी है। मानव के सम्बंध में ईश्वर का जो आदेश है, वही आज भी है, जो हज़ारों वर्ष पूर्व था। वह एक देश के निवासियों के लिये भी वही है जो दूसरे देश के निवासियों के लिये।

जीवन के कुछ पहलू तो परिवर्तनशील हैं उदाहरणार्थ सवारियां, निवास स्थान इत्यादि, परन्तु सत्य का सम्बंध इस प्रकार की वस्तुओं से नहीं है, सत्य का सम्बंध उस व्यक्ति से है, जो सदैव एक स्थिति में रहता है। सत्य का सम्बंध इससे है कि व्यक्ति किसको अपना जन्मदाता एवं स्वामी स्वीकार करे। वह किसके समक्ष झुके और किसकी उपासना करे। वह किससे भयभीत हो, और किससे प्रेम करे। वह अपनी सफलता ओर असफलता को किस पैमाने से परखे। उसके जीवन का उद्देश्य और भावनाओं का केन्द्र बिन्दु क्या हो? लोगों के मध्य रहते हुए वह किन नियमों के अन्तर्गत उनसे सम्बंध रखे। सत्य का सम्बंध जीवन के इन्ही कार्यो से है और यह क्रिया-कलाप वह है, जिनका कोई सम्बंध युग तथा भौगोलिक सीमा से नहीं है। वह प्रत्येक स्थान और प्रत्येक युग में समान रूप से प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षित होते हैं। ईश्वर एक एवं अनन्त है। ठीक इसी प्रकार सत्य भी एक है और शाश्वत भी।

★

संकट की घण्टी

जीवन की वास्तविकता क्या है? सामान्य व्यक्ति इस प्रकार के प्रश्नों में उलझना नहीं चाहता। उसकी दृष्टि मात्र सांसारिक जीवन पर रहती है। वह सोचना है कि यहाँ इ़ज़्ज़त और आराम के साथ अपनी आयु पूरी कर लो। इसके बाद न तुम होगे ओर न तुम्हारी कोई समस्या। दूसरे प्रकार के लोग वह हैं, जो इस प्रश्न के सम्बंध में विचार करते हैं किन्तु इनके विचार, दर्शन पर आधारित होते हैं। इस प्रकार के लोगों के सारे प्रयास वर्तमान संसार की सैद्धान्तिक व्याख्या प्राप्त करना होता है। परन्तु इस प्रकार की दार्शनिक विचार धारायें संख्या में अधिक और भिन्न होने के उपरान्त भी मात्र विचार धारायें ही होती हैं। वे व्यक्ति के लिये कोई व्यक्तिगत समस्या उत्पन्न नहीं करतीं। एक विश्वात्मा है, जो अपनी समग्रिता दर्शाने के लिये पूरी सृष्टि को चला रही है या ये समस्त वस्तुयें किसी सर्वोत्तम अस्तित्व के अंश हैं। इस प्रकार के सैद्धान्तिक तर्क-विर्तक से एक व्यक्ति का व्यक्तिगत सम्बंध क्या है? तीसरे प्रकार के लोग वह हैं जिनके पास इस प्रश्न का कोई न कोई धार्मिक उत्तर मौजूद है, परन्तु इसमें भी व्यक्ति के लिये कोई गम्भीर पक्ष नहीं है। इनमें से किसी के समक्ष ईश्वर का बेटा समस्त मानवजाति के लिये मुक्तिदाता बन चुका है तथा किसी के समीप जीवन हमारे चेतना से परे एक जबरी चक्र है और व्यक्ति एक जबरी व्यवस्था के

अन्तर्गत बार-बार जन्म लेता है और बार-बार मरता है। कोई कहता है कि व्यक्ति के जो कुछ पुरस्कार तथा दण्ड हैं, वह मात्र इसी सांसारिक जीवन में हैं आदि।

जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित इस प्रकार के जितने भी उतार हैं, वे आपस में एक दूसरे से भिन्न हैं, परन्तु इस दृष्टि से सब एक समान हैं कि इनमें से कोई ऐसा नहीं है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिये व्यक्गित रूप से कोई गम्भीर समस्या उत्पन्न करता हो। ये समस्त उत्तर या तो जो कुछ हो रहा है, उसकी मात्र व्याख्या है, या हमारे लिये मात्र एक प्रकार की अध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त करने का साधन है। वे इस प्रकार की कोई वस्तु नहीं है, जिसको किसी बड़े संकट का संकेत कहा जा सके।

परन्तु इस्लाम के अन्तिम ईशदूत हज़रत मोहम्मद सल्ल० का उत्तर इन समस्त उत्तरों से पूर्णतः भिन्न है। दूसरे उत्तरों में से कोई एक उत्तर भी व्यक्ति के लिये व्यक्तिगत प्रश्न नहीं बनता और न ही व्यक्ति के लिये कोई गम्भीर समस्या उत्पन्न करता है परन्तु अन्तिम ईशदूत का जवाब प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे भयानक मोड़ पर खड़ा कर देता है, जिसके बाद उसका अगला क़दम या तो विनाशता के भयानक गडढे में पड़ने वाला है, या सफलता की स्थायी दुनिया में। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति आप सल्ल० के आदर्शो के प्रति अत्याधिक गम्भीर हो जाये। वह अन्धकार में चलने वाले उस

यात्री से भी अधिक सावधान हो जाये, जिसकी टार्च अचानक उसको सावधान कर दे कि उसके सामने ठीक अगले क़दम पर एक विषैला सांप रेंग रहा है।

हज़रत मोहम्मद सल्ल० का सन्देश मानवजाति के लिये बहुत बड़ी चेतावनी है। आपने बताया कि वर्तमान संसार के पश्चात एक और विशाल संसार आने वाला है, जिसका नाम परलोक (आख़िरत) है। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति का हिसाब लिया जायेगा और प्रत्येक का उसके कर्मानुसार स्थायी पुरस्कार या स्थायी दण्ड मिलेगा और वर्तमान संसार में जो वस्तुयें व्यक्ति का सहारा बनी हुई हैं, उनमें से कोई भी वस्तु वहाँ किसी की सहायता न कर सकेंगी और न ही वहाँ क्रय-विक्रय होगा और न मित्रता काम आयेगी और ना किसी प्रकार की सिफारिश चलेगी। (सूरह बक़रा 254)

मोहम्मद सल्ल० की यह चेतावनी आपके अस्तित्व को प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्गित प्रश्न बना देती है। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति एक अत्यन्त कठिन परिणाम लिये खड़ा हुआ है। वह या तो आपके उपदेशों का अनुकरण करके स्वर्ग में जाने की तैयारी करे या आपके उपदेशों को भुला कर और स्वेच्छाचारी जीवन व्यतीत करके नर्क में जाने का ख़तरा मोल ले ।

यहाँ दो वस्तुयें हैं, जो इस समस्या को अत्याधिक गम्भीर बना रही हैं। आपके अतिरिक्त दूसरे लोग भी जो इस सम्बंध से

अपना दृष्टिकोण या विचार प्रस्तुत करते हैं, उनका प्रमाण अत्याधिक सन्देहास्पद है। वे लोग जो धन-संचय करने और मर जाने को सब कुछ समझते हैं। उनके पास अपने विचारों की पुष्टि के लिये कोई तर्क नहीं है। उनके चिन्तन का ढांचा तर्कहीन है, तथा मात्र तुच्छ भावनाओं पर स्थापित है। दार्शनिकों जैसी बात करने वाले लोगों के पास भी तर्क के नाम पर मात्र अनुमान है। उनको अपनी राय पर विश्वास है, और न ही वह कोई ऐसी अवधारणा प्रस्तुत कर सकते हैं जिसके ऊपर दूसरा व्यक्ति विश्वास कर सके।

इसके बाद वे लोग बचते है, जो ईशदूतों तथा धार्मिक ग्रन्थों के सन्दर्भ से बोल रहे हैं। ये सैद्धान्तिक तौर पर अपने पीछे एक विश्वसनीय आधार रखते हैं, परन्तु वे जिन धार्मिक ग्रन्थों और सन्देष्टाओं का सन्दर्भ देते हैं। उनका सम्बंध प्राचीनकाल से है। उन धार्मिक ग्रन्थों एवं सन्देष्टाओं के सम्बंध में आज हमारे पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। अतः सैद्धान्तिक तौर पर विश्वसनीय माध्यम से जुड़े होने के उपरान्त वे जो कुछ भी प्रस्तुत कर रहे हैं, वे स्वयं ही विश्वसनीय नहीं है, क्योंकि अतीत की किसी सत्यता को परखने का मापदण्ड इतिहास है, और इन शिक्षाअें को कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। परन्तु इस्लाम के पैग़म्बर (सन्देष्टा) का मामला बिल्कुल भिन्न है। एक ओर यह कि किसी व्यक्ति के ईशदूत होने का जो भी मापदण्ड स्थापित किया जाये, उस पर आप सल्ल० पूर्णरूपेण पूरे

उतरते हैं। आपके जीवन में वे सारे तत्व उच्चता के साथ विद्यमान हैं, जो एक ईशदूत में होने चाहिये। आप सल्ल० की पैग़म्बरी (ईशदूतत्व) एक ऐसी प्रमाणित घटना है, जिससे इन्कार किसी भी हाल में सम्भव नहीं है।

दूसरा यह कि आप सल्ल० का जीवन चरित्र एवं शिक्षायें सुदृढ़ता के साथ आज भी हमारे पास मौजूद हैं। जिनके ऐतिहासिक प्रमाण के सम्बंध में किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। आप सल्ल० पर अवतरित क़ुरआन आज भी उसी प्रकार उन्ही शब्दों में मौजूद है, जिन शब्दों में आपने दिया था। आपके कथन एवं कार्य इस सुदृढ़ता के साथ हदीस (मुहम्मद सल्ल० के बहुमूल्य कथन) और सीरत (मुहम्मद सल्ल० का जीवन चरित्र) की पुस्तकों में मौजूद हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे आज भी आप हमारे समक्ष बोल रहे हों, और चल फिर रहे हों। निसन्देह व्यक्ति आज भी मालूम कर सकता है कि आपने क्या कहा और क्या किया।

पैग़म्बर की चेतावनी के अनुसार हम एक ऐसी वास्तविकता के समक्ष है, जिसे हम परिवर्तित नहीं कर सकते। हम इनका सामना करने के लिये बाध्य हैं। मृत्यु अथवा आत्महत्या से भी हम नष्ट नहीं होते। बल्कि दूसरे लोक में प्रवेश कर जाते हैं। सफलता एवं असफलता का एक रेखाचित्र ईश्वर ने सदैव के लिये रेखाकिंत कर दिया है। किसी के लिये ये सम्भव नहीं है कि वह ईश्वरीय रेखांकन

को लेशमात्र परिवर्तित कर दे या स्वयं को इससे पृथक कर ले। हमें मात्र यह अधिकार प्राप्त है कि स्वर्ग अथवा नर्क में से किसी एक को चुन लें, परन्तु हमको यह अधिकार प्राप्त नहीं है कि दोनों से अलग होकर अपने लिये किसी तीसरे विकल्प को जन्म दें।

रसदगाह (वेधशाला) यदि भूकम्प की खबर दे तो यह एक ऐसे आने वाली दुर्घटना की ख़बर होती है। जिसमें निर्णय का अधिकार दूसरे लोगों को होता है। संकट में घिरे हुये लोगों की इसमें कोई भूमिका नहीं होती। व्यक्ति या तो इससे भागकर स्वयं को बचाये या इससे पड़कर अपने आपको नष्ट कर ले। इसी प्रकार प्रलय भी एक ऐसा भूकम्प है। जिसमें व्यक्ति या तो पैग़म्बर का अनुसरण एवं अनुपालन करके स्वयं को बचाये या उसकी शिक्षाओं को त्याग कर स्वयं को सदैव के लिये ख़त्म कर ले।

★

पैग़म्बर (ईशदूत) की शिक्षायें

ईश्वरीय धर्म मात्र एक धर्म है। सभी ईशदूतों के माध्यम से एक ही धर्म भेजा जाता रहा है, परन्तु मानव ने अपनी असावधानी के कारण या तो उसे समाप्त कर दिया या उसमें परिवर्तन कर दिया। मुहम्मद सल्ल० के माध्यम से उसी ईश्वरीय धर्म को पुर्नजीवित किया गया और उन्ही सिद्धान्तों को मूलतः प्रस्तुत करके सदैव के लिये पुस्तकीय रूप में सुरक्षित कर दिया गया। अब समस्त मानवजाति के लिये प्रलय तक यही प्रमाणित धर्म है। ईश्वर का सामीप्य और मुक्ति प्राप्त करने का इसके अतिरिक्त अन्य और कोई साधन नहीं है।

मुहम्मद सल्ल० ने बताया कि ईश्वर एक है और किसी भी प्रकार से उसका कोई भागीदार नहीं है। उसी ने सृष्टि को जन्म दिया और उस को ही समस्त शक्तियाँ प्राप्त हैं। मानव को चाहिये कि केवल उसी के आगे झुके और उसी की उपासना करे। उसी से मांगे और उसी से आशा लगाये। ईश्वर यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से दिखायी नहीं पड़ता, परन्तु वह मानव के इतना समीप है कि जब भी व्यक्ति उसको पुकारता है, तो वह उसकी पुकार को सुनता है और उसको जवाब देता है। ईश्वर के प्रति व्यक्ति का सबसे बड़ा गुनाह यह है कि वह किसी भी प्रकार से किसी दूसरे को ईश्वर का भागीदार या उसके समान ठहराये। कोई प्राणी ऐसा नहीं है, जिसको ईश्वर तथा उसके बन्दों के बीच मध्यस्थता का स्थान प्राप्त हो। व्यक्ति जब भी ईश्वर

को याद करता है तो वह सीधा ईश्वर से सम्बद्ध हो जाता हैं व्यक्ति को अपने जन्मदाता एवं पालनहार से जुड़ने के लिये किसी दूसरे माध्यम या साधन की आवश्यकता नहीं हैं। उसी प्रकार ईश्वरीय न्यायालय में किसी व्यक्ति का कोई सिफारिश करने वाला नहीं बन सकता। ईश्वर अपने प्रत्येक बन्दे का निर्णय स्वयं अपने ज्ञान के आधार पर करेगा। कोई भी ऐसा नहीं है जो उसके निर्णय को प्रभावित कर सके। ईश्वर का निर्णय किसी के अधीन नहीं हैं। ईश्वर के सारे निर्णय ज्ञान एवं तत्वदर्शिता के आधार पर होते हैं न कि सन्तुति या सामीप्य के आधार पर।

ईश्वर की उपासना कोई व्यवहारिक परिशिष्ट नहीं है। यह सम्पूर्ण जीवन सहित ईश्वर के प्रति समर्पण है। ईश्वर के उपासना करने वाला वही है, जो ईश्वर का उपासक, इस प्रकार बने कि ईश्वर ही उसका सब कुछ हो जाये। वह उसी की उपासना करें, उसी से डरे, उसी से प्रेम करे, उसी से आशा रखे और उसी को अपने ध्यान एवं गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बना ले। ईश्वर की उपासना, ईश्वर के समक्ष पूर्णतः समर्पित होने का नाम है, न कि मात्र पारंपरिक पूजा पाठ का। लोगों के मध्य रहते हुये व्यक्ति को प्रत्येक समय यह याद रखना चाहिये कि ईश्वर उसको देख रहा है और अपने ज्ञान के आधार पर उसके क्रिया-कलापों का हिसाब लेगा। इसलिये यह आवश्यक है कि व्यक्ति अत्याचार, झूठ, द्वेष घमण्ड, घृणा, ईर्ष्या,

स्वार्थ, लूट-खसोट, बेईमानी और इस प्रकार की दूसरी नैतिक बुराइयों से अपने आपको बचाये, ताकि ईश्वर के तराज़ू में वह अपराधी न ठहरे। ईश्वर से डरने वाला लोगों के मामले में निडर नहीं हो सकता। जो लोग दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करेंगे, उनको ईश्वर से अपने लिये अच्छे व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिये। ईश्वर के अच्छे व्यवहार का पात्र केवल वह है, जो ईश्वर के यहाँ इस प्रकार पहुँचे कि उसने ईश्वर के बन्दों के साथ अच्छा बर्ताव किया हो।

मुहम्मद सल्ल० ने बताया कि ईश्वर की ज़मीन में ईश्वर के बन्दों के लिये जीवन व्यतीत करने का मात्र एक ही उचित तरीक़ा है कि व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन तथा संसार के सारे मामलात में ईश्वर की आज्ञाओं का अनुपालन करे। इस आज्ञा पालन के सिद्धान्त एवं सूत्र क़ुरआन में उल्लिखित हैं और आप सल्ल० के जीवन में उसका व्यवहारिक आदर्श मौजूद है। अब समस्त मानव जाति के लिये ईश्वर के समीप प्रिय जीवन मात्र यह है कि वह क़ुरआन से अपने लिये मार्गदर्शन प्राप्त करे और मुहम्मद सल्ल० के उपदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करे।

मुहम्मद सल्ल० ने मानवजाति के लिये जो धर्म प्रस्तुत किया है वह व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन के लिये एक स्वच्छ तथा स्पष्ट दिशा निर्देश है, प्रत्येक व्यक्ति को उसी दिशा निर्देश के अनुसार जीवन

व्यतीत करना है। उसी मानचित्र के एक संक्षिप्त प्रतिरूप पाँच प्रमुख स्तम्भों के रूप में स्थापित किया गया है। यह पाँच स्तम्भ ही सम्पूर्ण इस्लामी जीवन का आधार हैं।

पहला कलिमा शहादत- (लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूल्लाह) अर्थात (ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्ल० ईश्वर के सन्देष्टा हैं) का हृदय से स्वीकार करना। यह वाक्य एक प्रकार की घोषणा है, जो यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति ने एक क्षेत्र से निकलकर दूसरे क्षेत्र में प्रवेश किया। वह ग़ैर-इस्लाम को त्यागकर इस्लाम के आँचल में आ गया। दूसरी चीज़ नमाज़ है, यानी पैग़म्बर के बताये हुये तरीक़ों के अनुसार प्रत्येक दिन पाँच समय ईश्वर की उपासना करना। तीसरी चीज़ रोज़ा है, अर्थात प्रतिवर्ष रमज़ान के महीने में पूरे एक महीने तक सहनशीलता का वह अभ्यास करना जिसको रोज़ा कहा गया है। चौथी चीज़ ज़कात है, यानी व्यक्ति अपने माल में से प्रतिवर्ष ईश्वर की बताई हुई मदों में खर्च करे। पांचवी चीज़ हज है, यानी सार्मथ्य के अनुसार जीवन में कम से कम एक बार बैतुल्लाह (ईश्वर का घर) का हज करना। व्यक्ति जब ये पाँच अनुबन्धों को पूरा करता है तो वह पैग़म्बर की स्थापित की हुई इस्लामी बिरादरी में शामिल हो जाता है।

जीवन दो प्रकार होते हैं। एक जीवन वह है, जो परलोक के आधार पर बनता है। दूसरा जीवन वह है, जो संसार के आधार पर

बनता है। परलोक के आधार पर बनने वाले जीवन में मार्ग दर्शक का स्थान पैग़म्बर को प्राप्त होता है। व्यक्ति पैग़म्बर के उपदेशों के अनुसार अपना विश्वास बनाता है और उन्ही उपदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है और इसके विपरीत वह जीवन जिसका आधार संसार होता है। उसमें व्यक्ति अपना मार्गदर्शक स्वयं होता है और अपने विवेक तथा इच्छाओं के अनुसार अपने चिन्तन एवं कर्म का ढांचा बनाता है। पहला व्यक्ति ईश्वर का भक्त होता है और दूसरा व्यक्ति स्वयं अपना।

ईशदूत के मार्ग दर्शन में जो जीवन बनता है, उसके अनेक भाग हैं। ईश्वर पर ईमान (विश्वास) रसूलों पर ईमान, फ़रिश्तों पर ईमान, ईश्वर के ग्रन्थों पर ईमान, प्रलय (क़ियामत) पर ईमान मृत्यु के पश्चात जीवन (आख़िरत) पर ईमान (जन्नत, दोज़ख) पर ईमान अल्लाह (ईश्वर) के मालिक तथा हाकिम (शासक) होने पर ईमान, इन विश्वासों के तहत जो व्यक्ति बनता है, वह ऐसा व्यक्ति होता है, जो अपने आपको ईश्वर के समक्ष समर्पित कर देता है। उसके जीवन की समस्त गतिविधियां परलोक पर आधारित हो जाती हैं। उसकी उपासना एवं बलिदान तथा उसका जीना और मरना ईश्वर और उसके पैग़म्बर के लिये हो जाता है।

जो जीवन स्वमार्गदर्शन से बनेगा, वह एक निरकुंश तथा स्वच्छन्द जीवन होता है। उसमें व्यक्ति को इससे बहस नहीं होती कि

वास्तविकता क्या है? वह अपनी सोंच के अनुसार अपनी पसन्द की आस्था बना लेता है। उसके रात व दिन स्वयं अपनी बुद्धि एवं इन्द्रियों के मार्गदर्शन में व्यतीत होते हैं। उसकी समस्त गतिविधियां सांसारिक एवं भौतिक सुखों के चारों ओर घूमती हैं। वह स्वनिर्माण का कार्य अपने मनोभावों के अनुकूल करता है। ईश्वर और ईशदूत उसके जीवन के निर्माता नहीं होते।

जो लोग किसी पिछले ईशदूत के नाम पर किसी धर्म को पकड़े हुये हैं, उनकी धार्मिकता या उपासना उस समय तक विश्वसनीय नहीं होती, जब तक वह ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान न लाये। मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाना मानों कि खुद अपने पूर्व-धर्म को ही अधिक सही और पूर्णरूप से ग्रहण करना है। जो लोग आप सल्ल० पर ईमान न लायें, वह अपने कार्यो से इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि सन्देष्टा के नाम पर अपनी जातीय परम्परा और वर्गीय पक्षपात को अपना धर्म बनाये हुये हैं, जो लोग जातीय धर्म के उपासक हैं, वह मुहम्मद सल्ल० के द्वारा लाये हुये ईश्वरीय धर्म को न पायेंगे। वह अपने पक्षपात के कारण आपके द्वारा लायी हुयी उस सच्चाई को न देख सकेंगे, जो ईश्वर ने अपने अन्तिम ईशदूत के द्वारा उनके लिये खोली है। बल्कि जो लोग वास्तव में ईश्वर और ईशदूत के मानने वाले हैं, उनको अन्तिम ईशदूत का

धर्म अपना ही धर्म मालूम होगा। वह उसको इस प्रकार स्वीकार कर लेंगे जैसे कोई व्यक्ति अपनी खोई हुई वस्तु को दौड़कर प्राप्त कर लेता है।

★

मृत्यु की ओर

मृत्यु का आगमन अटल है। कोई इससे बच नहीं सकता। वास्तव में मृत्यु दो प्रकार की होती हैं। एक वह मृत्यु जब कि एक व्यक्ति ईश्वर को पाने का अपना उद्देश्य बनाये हुये हो, वह ईश्वर के लिये बोलता हो और ईश्वर के लिये ही मौन रहता हो, उसका ध्यान परलोक की ओर लगा हुआ हो, ऐसे व्यक्ति के लिये मृत्यु का अर्थ यह है कि वह अपने पालनहार की ओर यात्रा कर रहा था और मृत्यु के फ़रिश्ते ने उसकी यात्रा को कम करके उसको उसकी मंज़िल तक पहुँचा दिया।

दूसरा व्यक्ति वह है, जिसने अपने मालिक को भुला दिया। उसका रुकना और चलना ईश्वर के लिये नहीं होता। वह अपने पालनहार को त्यागकर दूसरी ओर दौड़ रहा है। ऐसे व्यक्ति के लिये मृत्यु का दिन उसकी गिरफ्तारी का दिन है। उसकी मिसाल उस विद्रोही की सी है, जो कुछ दिनों तक विद्रोह करे, उसके पश्चात उसे बन्दी बनाकर न्यायालय में उपस्थित कर दिया जाये।

ज़ाहिरी तौर से मृत्यु एक ही है, जो दोनों व्यक्तियों को अपने आंचल में ले लेती है, परन्तु दोनों में उतना ही अन्तर है, जितना कि पुष्प और अग्नि में। एक के लिये मृत्यु ईश्वर का अतिथि बनना है तथा दूसरे के लिये मृत्यु ईश्वर के बन्दीगृह में डाला जाना है! एक के लिये मृत्यु स्वर्ग के उपवनों में प्रवेश का द्वार है, तो दूसरे

के लिये नरक की ज्वलन्तशील अग्नि में डाल दिया जाना है, ताकि वह अपने विद्रोह जैसे अपराध के कारण सदैव जलता रहे।

मोमिन (ईशभक्त) और ग़ैर मोमिन की पहचान यह है कि मोमिन वह है, जिसकी दृष्टि मृत्यु की समस्याओं की ओर लगी रहती है, जो मृत्यु के बाद अपने वाली दुनिया (मरणोत्तर जीवन) में सम्मान प्राप्त करने के उद्देश्य से अपना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित किये हुये है। इसके विपरीत ग़ैर मोमिन (ईश्वर का विद्रोही) वह है, जो जीवन की समस्याओं में उलझा हुआ है, जो वर्तमान संसार में सम्मान और सफलता प्राप्त करने को महत्वपूर्ण चीज़ समझता है। वर्तमान परिपेक्ष्य एवं सन्दर्भ में ऐसा विदित होता है कि मूलरूप से सफल व्यक्ति वही है, जो वर्तमान संसार में अपनी जड़ें सुदृढ़ किये हुये हो, परन्तु मृत्यु इस झूठ का पूर्णतः अन्त कर देगी और इसके उपरान्त एकाएक यह मालूम होगा कि वही व्यक्ति सुदृढ़ आधार पर खड़ा हुआ था, जिसको संसार वालों ने आधारहीन समझ लिया था और सारे लोग आधारहीन थे, जो मृत्यु से पूर्व की परिस्थितियों में प्रतिष्ठा एवं उन्नति की चरम सीमा पर बैठे हुये दिखाई देते थे। मृत्यु हर वस्तु को झूठा सिद्ध कर देगी और इसके पश्चात उसी वस्तु का अस्तित्व बचेगा, जिसका परलोक के जीवन में कोई मूल्य हो। सच्चाई की पुकार पर ध्यान न देना सदैव इसलिये होता है कि व्यक्ति के

सामने मात्र मृत्यु के पूर्व का जीवन होता है। व्यक्ति यदि मृत्यु के बाद का जीवन देख ले तो आज ही वह ईश्वर के सामने झुक जायेगा, जिसके आगे उसे कल झुकना है जबकि कल का झुकना किसी के कुछ काम न आयेगा।

★

अन्तिम शब्द

एक घन्टाघर का किसी चौराहे पर निर्माण कर दिया जाये तो प्रत्येक व्यक्ति उसमें समय देखता है और अपनी घड़ियां उससे मिलाता है। किसी भी व्यक्ति को यह सोचने की आवश्यकता नहीं होती कि जिन कारीगरों ने अथवा जिन इन्जीनियरों ने इसे तैयार किया है, वे मुसलमान थे या हिन्दू, अपनी जाति के थे, या किसी अन्य जाति के, या यह कि इसमें जो घड़ी लगाई गयी है। वह कहाँ की बनी हुई है, अपने देश की है, या किसी अन्य देश की। मात्र इस बात का विश्वास है कि इससे सही समय मालूम किया जा सकता है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। ईश्वरीय धर्म भी समस्त मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये इसी प्रकार का एक घण्टाघर है, परन्तु यहाँ ऐसा नहीं होता कि लोग इसको देखें और उससे अपना मार्गदर्शन प्राप्त करें।

इसका कारण क्या है? इसका कारण मात्र एक है कि लोग समय मालूम करने के सम्बंध में तो गम्भीर हैं, परन्तु ईश्वर के आदेशों को जानने में गम्भीर नहीं हैं। ईश्वरीय धर्म का सम्बंध मरणोत्तर जीवन से है और घड़ी का सम्बंध वर्तमान जीवन से। लोगों ने जिस वस्तु को अपना उद्‌देश्य बनाया है, उसके सम्बंध में घड़ी का महत्व एवं आवश्कता उन्हें मालूम है, परन्तु अगले जीवन में सफलता प्राप्त करने का उन्होंने अपना उद्‌देश्य ही नहीं बनाया, फिर

उन्हें मार्गदर्शन देने वाली वस्तु की आवश्यकता का एहसास क्यों कर हों।

फिर ईशभक्ति का तक़ाज़ा मात्र यह नहीं है कि उसको स्वीकार किया जाये, बल्कि यह भी आवश्यक है कि उसके साथ अपने को सम्मिलित भी किया जाये।

ईशभक्ति अपनी मूल वास्तविकता के अनुसार एक आन्तरिक दशा का नाम है, परन्तु उसी के साथ उसका वाह्य रूप भी है। ईश्वर की प्राप्ति किसी व्यक्ति के लिये तीव्र प्रभावशीलता की सर्वोच्च घटना है और तीव्र प्रभावशीलता कभी भी छुपी नहीं रह सकती। यदि एक व्यक्ति पर ईश्वर की सत्यता प्रकट हो तो वह अवश्य ही प्रकट हो कर रहेगी। ऐसा व्यक्ति बिना अधिकार के चाहेगा कि उसका सम्पूर्ण वातावरण इस बात का साक्षी बन जाये कि वह ईश्वर की पुकार पर उपस्थित हुआ है और उसने स्वार्थ और हित की मूर्तियों को तोड़ कर उसका साथ दिया। यदि कोई व्यक्ति आन्तरिक श्रद्धा (क़ल्बी ईमान) का दावेदार हो, मगर वह घोषणा एवं ऐलान से बचता हो तो यह निश्चय ही इस बात का प्रमाण है कि वह नीति के बन्धन का शिकार है, और जो लोग ईश्वर की तुलना में नीति को प्राथमिकता दें, वे कभी भी ईश्वर को प्राप्त नहीं कर पाते। नीति और पक्षपात ईशभक्ति का विलोम है। नीति एवं पक्षपात के साथ ईशभक्ति का एक आत्मा में इकट्ठा होना सम्भव नहीं है।

★ ★ ★